शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

जैसी दृष्टि वैसी स्रष्टि

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

यह संसार विचारों का प्रतिबिंब है। हम जैसे होते हैं वैसा ही हमें संसार दिखाई देता है। आतंरिक अनुभव से ही हम अपना संसार स्वयं निर्मित करते हैं। यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है कि बाह्य जगत में क्या है। यह सारा कुछ हमारी चेतनावस्था ने ही छाया का रूप धारण कर रखा है। हमारी जैसी आंतरिक अवस्था होती है, वैसा ही बाह्य जगत दिखाई देने लगता है। हम प्रत्येक वस्तु को उसी रंग में देखते हैं, जैसी हमें वह दिखाई देती है। अनुभव के द्वार से प्रवेश होने के बाद कोई भी पदार्थ हमारा अंग बन जाता है। हमारी सृष्टि निर्माण के मूल में हमारे विचार, हमारी इच्छाएं और उच्च अभिलाषाएं हैं। हमें वस्तुओं में सुंदरता, आनंद, सुख अथवा कुरूपता, दुःख और शोक दिखाई देता है, लेकिन वास्तव में यह सारी भावनाएं हमारे भीतर ही होती हैं। हम अपने विचारों से ही अपने जीवन, जगत और विश्व को बनाते या बिगाड़ते हैं। हम अपनी विचार शक्ति से अपने भीतरी तत्व को आकार देते जाते हैं। उसके अनुसार ही हमारा बाह्य जीवन और परिस्थितियां बनती जाती हैं। हम जिन भी वस्तुओं को अपने हृदय में दृढ़तापूर्वक स्थान देंगे, हमारा बाह्य जीवन वैसा ही रूप धारण कर लेगा। यदि हमारी आत्मा अथवा भीतरी तत्व अपवित्र, दूषित, स्वार्थ, विपत्ति और दुष्परिणाम की ओर अधिक झुकता चला जाता है तब वैसा ही परिणाम प्राप्त होना अवश्यंभावी हो जाता है। इसके विपरीत जब हम पवित्र, स्वार्थरहित और उच्च भावों से ओतप्रोत होते हैं तब हमारी आत्मा सुख और आनंद की ओर अग्रसर हो जाती है। आकर्षण के नियम के अनुसार प्रत्येक आत्मा स्वजातीय विचारों को ही अपनी ओर आकृष्ट करती है। जिस हृदय में इसका अनुभव होता है, वह ईश्वरीय नियम की व्यापकता में विश्वास रखता है। मनुष्य के आंतरिक विचार जगत के गुण-दोष ही उसके जीवन को बनाने और बिगाड़ने के लिए उत्तरदायी होते हैं। जीवन में घटित होने वाली घटनाओं के सूक्ष्म विश्लेषण से इसका पता लगाया जा सकता है। हमारे विचारों के अनुरूप ही हमारे आसपास का संसार निर्मित होता है। जीवधारी अथवा निर्जीव रूप वाले समस्त पदार्थ हमारे विचारों का फल हैं। वह हमारे विचारों से ही उत्पन्न हुए हैं। यदि कोई व्यक्ति सुखी है तो इसका यही कारण है कि वह सुखदायी विचारों में नित्यप्रति अवगाहन करता है और अगर वह दुःखी है तो निराशाजनक विचारों में डूबे रहने के कारण। मनुष्य की विभिन्न अवस्थाओं का कारण उसकी आत्मा के अंदर ही रहता है, परंतु वह भ्रमवश अपने बाहर उन कारणों की तलाश करता रहता है। अनेक व्यक्ति अपने सुख अथवा दुःख के लिए परिस्थितियों को जिम्मेदार मानते हैं। परिस्थितियों का उसी सीमा तक प्रभाव पड़ता हे, जिस सीमा तक उनका प्रभाव होने देंगे। विचार की शक्ति का ठीक-ठीक ज्ञान न होने से हम घटनाओं के प्रवाह में बह जाते हैं। वास्तव में

हमारे 'विश्वास' पर ही सुख-दुःख की मात्रा अवलंबित होती है। हम अपने को परिस्थितियों का दास मान लेते हैं, उसके सामने झुक जाते हैं, हम बिना शर्त उसकी हर बात मानने को बाध्य हो जाते हैं। हम ऐसा कहकर परिस्थितियों को शक्ति प्रदान कर देते हैं, जो वास्तव में उसमें नहीं है। परिस्थितियों में सुख-दुःख पहुंचाने की शक्ति नहीं होती। एक ही परिस्थिति से किसी व्यक्ति को सुख होता है वहीं दूसरे को वह दुःखी कर देती है। भलाई-बुराई करने की शक्ति उस घटना में नहीं बल्कि हमारे मस्तिष्क में है। यह अनुभव आते ही हम अपने विचारों पर शासन करने लगते हैं। अपने अंतःकरण से सभी प्रकार के अनुपयोगी और अनावश्यक विचारों को निकालकर फिर से उन्हें व्यवस्थित करना आरंभ कर देते हैं। तब हमारे अंदर केवल प्रसन्नता और शांति, शक्ति और जीवन, दया और प्रेम, सौंदर्य और अमरत्व के ही भावों का संचार होने लगता है। जिस समय हम ऐसा करने लगेंगे, तब प्रसन्न, शांतचित्त, शक्तिशाली, स्वस्थ, दयावान, प्रेमी और अमरत्व के सौंदर्य से सुंदर बन जाएंगे। जीवन की प्रत्येक दशा एक नियमित अनुक्रम में बंधी हुई है और प्रत्येक परिस्थिति का रहस्य और कारण उसमें वर्तमान रहता है। बस इसे अपने भीतर खोजने की आवश्यकता है। शब्दब्रह्म के सुधी शोधार्थियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ....।